ISSN: 2249-7196
IJMRR/Oct-Dec. 2023/ Volume 13/Issue 4/99-109
Suresh Kumar Srivastav / International Journal of Management Research & Review

तकनीकी आधुनिकता में यौनिकता की राजनीतिक पुनर्संरचना

सर्वेश कुमार श्रीवास्तव[1], डॉ. जितेंद्र कुमार नायक[2]

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (मध्य प्रदेश)[1]

पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (मध्य प्रदेश)[2]

सार

प्रस्तुत शोध पत्र तकनीकी आधुनिकता के संदर्भ में यौनिकता की राजनीतिक पुनर्संरचना का विश्लेषण करता है। डिजिटल युग में यौनिकता के विमर्श, अभिव्यक्ति और नियंत्रण के नए आयाम उभरे हैं जो परंपरागत लैंगिक मानदंडों को चुनौती देते हैं। यह अध्ययन डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, सोशल मीडिया और ऑनलाइन स्थलों पर यौनिकता की अभिव्यक्ति, उसके राजनीतिक निहितार्थ और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंधों की पड़ताल करता है। शोध में मिश्रित पद्धति का उपयोग करते हुए विभिन्न आयु वर्ग, लिंग और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रतिभागियों से डेटा संकलित किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि तकनीकी माध्यम यौनिकता की समझ, अभिव्यक्ति और राजनीतिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहे हैं। डिजिटल स्थलों पर लैंगिक समानता, यौन स्वतंत्रता और पहचान की राजनीति के नए रूप सामने आ रहे हैं जो पारंपरिक शक्ति संरचनाओं को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं।

मुख्य शब्द: डिजिटल यौनिकता, तकनीकी आधुनिकता, लैंगिक राजनीति, सोशल मीडिया, यौन अभिव्यक्ति

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी में तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को गहराई से प्रभावित किया है। यौनिकता, जो सदैव सामाजिक-राजनीतिक नियंत्रण का केंद्र रही है, डिजिटल युग में नए आयाम प्राप्त कर रही है। इंटरनेट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल संचार माध्यमों ने यौनिकता की अभिव्यक्ति, चर्चा और राजनीतिक

संगठन के अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। पारंपरिक समाजों में यौनिकता निजी क्षेत्र तक सीमित मानी जाती थी, परंतु डिजिटल स्थलों पर यह सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बन गई है। तकनीकी आधुनिकता ने यौनिकता की राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लैंगिक पहचान, यौन अभिविन्यास और शारीरिक स्वायत्तता से जुड़े विमर्श नई ऊर्जा के साथ उभरे हैं। सोशल मीडिया आंदोलनों ने यौन हिंसा, उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाई है। साथ ही, डिजिटल स्थल नए प्रकार के नियंत्रण और निगरानी के माध्यम भी बन गए हैं। ऑनलाइन स्थलों पर यौन सामग्री का प्रसार, साइबर उत्पीड़न और डिजिटल निगरानी नई चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं। भारतीय संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां पारंपरिक मूल्य और आधुनिक तकनीकी प्रगति के बीच जटिल संबंध देखे जा सकते हैं। युवा पीढ़ी डिजिटल माध्यमों के माध्यम से यौनिकता की नई समझ विकसित कर रही है, जबकि पारंपरिक संस्थाएं इस परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध दर्शाती हैं। यह शोध पत्र इन्हीं जटिलताओं को समझने और विश्लेषित करने का प्रयास है।

2. साहित्य समीक्षा

डिजिटल युग में यौनिकता की राजनीति पर व्यापक शोध कार्य हुआ है जो विभिन्न आयामों को उजागर करता है। डेविस (2020) ने अपने अध्ययन में लिंग, यौनिकता और नस्ल के बीच डिजिटल संदर्भ में जटिल अंतर्संबंधों की पड़ताल की है। उन्होंने प्रदर्शित किया कि तकनीकी प्लेटफॉर्म्स केवल तटस्थ माध्यम नहीं हैं बल्कि वे विशिष्ट लैंगिक और नस्लीय पूर्वाग्रहों को सुदृढ़ करते हैं। डिजिटल स्थलों पर प्रतिनिधित्व की राजनीति यह निर्धारित करती है कि किन आवाजों को सुना जाता है और किन्हें हाशिए पर रखा जाता है। पटेल (2019) का शोध डिजिटल सशक्तिकरण की अवधारणा की आलोचनात्मक जांच प्रस्तुत करता है। उन्होंने प्रश्न उठाया कि डिजिटल तकनीकें वास्तव में किसका सशक्तिकरण करती हैं और लैंगिकता तथा यौनिकता की सीमाएं कैसे पुनर्निर्मित होती हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तकनीकी पहुंच और डिजिटल साक्षरता में व्याप्त असमानताएं यौनिकता की अभिव्यक्ति को प्रभावित करती हैं। डिजिटल विभाजन केवल तकनीकी पहुंच का मामला नहीं है बल्कि यह शक्ति और संसाधनों के असमान वितरण को प्रतिबिंबित करता है। राव (2020) द्वारा दिल्ली की शहरी मलिन बस्तियों

में किए गए क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन ने लिंग और डिजिटल विभाजन के बीच सीधे संबंध को प्रमाणित किया। उन्होंने पाया कि महिलाओं की डिजिटल तकनीकों तक पहुंच पुरुषों की तुलना में सीमित है और यह असमानता यौन शिक्षा और स्वास्थ्य सूचना तक पहुंच को भी प्रभावित करती है। यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्थिति और लैंगिक असमानता के प्रतिच्छेदन को रेखांकित करता है। वर्मा, नायर और कुमार (2020) ने भारतीय किशोरों के लिंग-आधारित मानदंडों के अनुभवों को समझने के लिए सहभागी कहानी-कहने के खेल का उपयोग किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि डिजिटल माध्यम युवाओं को लैंगिक मानदंडों पर सवाल उठाने का स्थान प्रदान करते हैं।

मूर्ति ने डिजिटल मीडिया में लैंगिक रूढ़िवादिता की निरंतरता का विश्लेषण किया है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि नए मीडिया प्लेटफॉर्म्स भी पारंपरिक लैंगिक स्टीरियोटाइप्स को पुनरुत्पादित करते हैं, हालांकि नए रूपों में। डिजिटल विज्ञापन, सोशल मीडिया कंटेंट और ऑनलाइन मनोरंजन में महिलाओं और पुरुषों का प्रतिनिधित्व अक्सर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को ही सुदृढ़ करता है। कुमार का शोध ऑनलाइन संगीत और लिंग अभिव्यक्ति के बीच संबंधों को उजागर करता है। उन्होंने दिखाया कि डिजिटल संगीत प्लेटफॉर्म्स यौन पहचान और अभिव्यक्ति के नए रूप प्रस्तुत कर रहे हैं। नारीवादी डिजिटल सक्रियता पर ब्राउन (2021) का अध्ययन समकालीन नारीवादी आंदोलनों की डिजिटल संभावनाओं की पड़ताल करता है। उन्होंने ट्विटर पर 25 नवंबर के वार्तालाप का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि सोशल मीडिया ने यौन हिंसा के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय लामबंदी को संभव बनाया है। सुंडस्ट्रॉम (2021) ने स्वीडन में नारीवादी डिजिटल कूटनीति के माध्यम से विदेश नीति में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया। उनका शोध दर्शाता है कि डिजिटल तकनीकें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक राजनीति को कैसे प्रभावित करती हैं। अब्राहम (2021) द्वारा हिंदी फिल्मों में ईसाई महिला पात्रों के प्रतिनिधित्व का अध्ययन मीडिया में यौनिकता की राजनीति को समझने में सहायक है। उन्होंने दिखाया कि फिल्मी प्रतिनिधित्व सामाजिक धारणाओं को प्रभावित करता है और यौनिकता की समझ को आकार देता है। शास्त्री ने डिजिटल युग में विवाह और तलाक के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार ऑनलाइन डेटिंग प्लेटफॉर्म्स और सोशल मीडिया ने संबंधों की प्रकृति और पारिवारिक संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

मेनन का शोध डिजिटल युग में यौन अपराध और कानून के बीच संबंधों की जांच करता है। उन्होंने साइबर स्पेस में यौन उत्पीड़न, ऑनलाइन शोषण और डिजिटल यौन अपराधों की बढ़ती घटनाओं का विश्लेषण किया है। यह अध्ययन कानूनी ढांचे की अपर्याप्तता और डिजिटल यौन अपराधों से निपटने में आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करता है। विलियम्स (2018) ने डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-देखभाल की नारीवादी राजनीति पर चर्चा की है। कौर (2018) का अध्ययन राजनीति में महिलाओं की भागीदारी और डिजिटल तकनीक के उपयोग के बीच संबंध स्थापित करता है। राधाकृष्णन (2016) ने लिंग संबंधी दृष्टिकोण के अंतर-पीढ़ीगत संचरण का अध्ययन किया है जो यह समझने में मदद करता है कि पारंपरिक मूल्य और आधुनिक तकनीकी प्रभाव कैसे टकराते हैं।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. पहला उद्देश्य तकनीकी आधुनिकता के संदर्भ में यौनिकता की अभिव्यक्ति और प्रतिनिधित्व के बदलते स्वरूपों का विश्लेषण करना है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर यौनिकता कैसे व्यक्त की जाती है, कौन से माध्यम प्रमुख हैं और विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए यह अभिव्यक्ति कैसे भिन्न होती है, इन प्रश्नों की गहन जांच करना आवश्यक है।
2. दूसरा उद्देश्य डिजिटल स्थलों पर यौनिकता से संबंधित राजनीतिक गतिशीलता और शक्ति संरचनाओं को समझना है। सोशल मीडिया आंदोलन, ऑनलाइन सक्रियता और डिजिटल प्रतिरोध के रूप किस प्रकार पारंपरिक लैंगिक शक्ति संबंधों को चुनौती देते हैं और नए प्रकार के नियंत्रण तंत्र कैसे विकसित होते हैं, इन पहलुओं का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।
3. तीसरा उद्देश्य तकनीकी माध्यमों के माध्यम से यौनिकता की समझ में होने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों की पहचान करना है। डिजिटल युग में विभिन्न आयु वर्ग, लिंग और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

के लोगों में यौनिकता की धारणा कैसे बदल रही है और यह परिवर्तन पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच कैसे संतुलन स्थापित करता है, इसका मूल्यांकन करना आवश्यक है।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग किया गया है जो मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों उपागमों को समाहित करती है। शोध का क्षेत्र दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु के महानगरीय क्षेत्र रहे हैं जहां तकनीकी पहुंच अपेक्षाकृत अधिक है। अध्ययन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का उपयोग करते हुए अठारह से पैंतालीस वर्ष की आयु के पांच सौ प्रतिभागियों का चयन किया गया। प्रतिभागियों में विभिन्न लिंग पहचान, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक स्तर के लोग शामिल थे। आंकड़ों के संकलन के लिए संरचित प्रश्नावली, गहन साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चा का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में डिजिटल माध्यमों के उपयोग, यौनिकता की अभिव्यक्ति, ऑनलाइन सक्रियता और लैंगिक मानदंडों से संबंधित प्रश्न शामिल थे। गुणात्मक आंकड़ों के लिए तीस विस्तृत साक्षात्कार और आठ फोकस समूह चर्चाएं आयोजित की गईं। डिजिटल एथनोग्राफी के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर यौनिकता से संबंधित विमर्शों का अवलोकन भी किया गया। मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी, क्रॉस-टैबुलेशन और काई-स्क्वायर परीक्षण के माध्यम से चरों के बीच संबंधों की जांच की गई। गुणात्मक आंकड़ों के लिए विषयगत विश्लेषण पद्धति अपनाई गई जिसमें आवर्ती विषयों और प्रतिमानों की पहचान की गई। शोध में नैतिक मानकों का पूर्ण रूप से पालन किया गया और सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त की गई। गोपनीयता और गुमनामी बनाए रखने के लिए विशेष सावधानियां बरती गईं।

5. परिणाम

शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण पांच प्रमुख सारणियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जो तकनीकी आधुनिकता में यौनिकता की राजनीतिक पुनर्संरचना के विभिन्न आयामों को दर्शाती हैं।

सारणी 1: डिजिटल प्लेटफॉर्म उपयोग और यौन अभिव्यक्ति के स्तर

आयु वर्ग	दैनिक उपयोग (घंटे)	यौन विषयों पर चर्चा (%)	स्वतंत्र अभिव्यक्ति स्कोर	ऑनलाइन सक्रियता (%)
18-25	6.2	42.3	7.8/10	38.5
26-35	4.8	35.7	6.4/10	31.2
36-45	3.1	18.4	4.2/10	15.8

सारणी एक में प्रस्तुत आंकड़े डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग और यौन अभिव्यक्ति के स्तर के बीच सीधा संबंध प्रदर्शित करते हैं। युवा आयु वर्ग में दैनिक उपयोग की अवधि सबसे अधिक पाई गई जो औसतन छह दशमलव दो घंटे है। इस वर्ग में यौन विषयों पर खुली चर्चा की प्रवृत्ति बयालीस दशमलव तीन प्रतिशत है जो अन्य आयु वर्गों की तुलना में काफी अधिक है। स्वतंत्र अभिव्यक्ति स्कोर जो दस में से सात दशमलव आठ है, यह दर्शाता है कि युवा डिजिटल माध्यमों पर अधिक सहज महसूस करते हैं। मध्यम आयु वर्ग में ये सभी संकेतक कम हैं और उम्र बढ़ने के साथ और भी घटते जाते हैं। ऑनलाइन सक्रियता की दर भी युवा वर्ग में उल्लेखनीय रूप से अधिक है जो लैंगिक और यौन मुद्दों पर डिजिटल माध्यमों के माध्यम से सक्रिय भागीदारी को दर्शाती है।

सारणी 2: लिंग और डिजिटल यौन सशक्तिकरण की धारणा

लिंग पहचान	सशक्तिकरण अनुभव (%)	डिजिटल साक्षरता स्कोर	यौन स्वायत्तता स्कोर	सुरक्षा चिंता (%)
महिला	58.3	6.8/10	6.2/10	72.4
पुरुष	71.2	7.6/10	7.9/10	34.6
गैर-बाइनरी	45.7	6.1/10	5.4/10	81.3

सारणी दो से स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों के माध्यम से यौन सशक्तिकरण की धारणा लिंग के आधार पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न है। पुरुष प्रतिभागियों में सशक्तिकरण का अनुभव इकहत्तर दशमलव दो प्रतिशत पाया गया जो महिलाओं के अट्ठावन दशमलव तीन प्रतिशत से काफी अधिक है। डिजिटल साक्षरता में भी पुरुष आगे हैं जिनका औसत स्कोर सात दशमलव छह है। यौन स्वायत्तता के मामले में भी यही प्रवृत्ति देखी गई। सबसे चिंताजनक पहलू सुरक्षा संबंधी चिंताओं में भारी अंतर है जहां महिलाओं में बहत्तर दशमलव चार प्रतिशत और गैर-बाइनरी समूह में इक्यासी दशमलव तीन प्रतिशत प्रतिभागियों ने ऑनलाइन सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। यह आंकड़े डिजिटल स्थलों पर व्याप्त लैंगिक असमानता और भेदभाव को प्रतिबिंबित करते हैं।

सारणी 3: सामाजिक-आर्थिक स्थिति और डिजिटल यौन अभिव्यक्ति

आर्थिक वर्ग	स्मार्टफोन पहुंच (%)	प्रीमियम प्लेटफॉर्म उपयोग (%)	यौन शिक्षा स्रोत-डिजिटल (%)	गोपनीयता नियंत्रण ज्ञान (%)
उच्च	98.7	76.4	82.3	89.5
मध्यम	87.3	41.2	64.8	58.7
निम्न	54.6	8.3	31.4	22.3

सारणी तीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति और डिजिटल यौन अभिव्यक्ति के बीच गहरे संबंध को उजागर करती है। उच्च आर्थिक वर्ग में स्मार्टफोन की पहुंच लगभग सार्वभौमिक है जबकि निम्न वर्ग में यह केवल चौवन दशमलव छह प्रतिशत है। प्रीमियम प्लेटफॉर्म्स का उपयोग जो बेहतर सुरक्षा और विविध सामग्री प्रदान करते हैं, उच्च वर्ग में छिहत्तर दशमलव चार प्रतिशत है जबकि निम्न वर्ग में केवल आठ दशमलव तीन प्रतिशत। यौन शिक्षा के डिजिटल स्रोतों तक पहुंच में भी व्यापक असमानता देखी गई जहां उच्च वर्ग में बयासी दशमलव तीन प्रतिशत और निम्न वर्ग में केवल इकतीस दशमलव चार प्रतिशत लोग इन संसाधनों का उपयोग करते हैं। गोपनीयता नियंत्रण का ज्ञान भी आर्थिक स्थिति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ पाया गया।

सारणी 4: डिजिटल सक्रियता और लैंगिक राजनीति में भागीदारी

सक्रियता प्रकार	महिला प्रतिभागी (%)	पुरुष प्रतिभागी (%)	हैशटैग आंदोलन में भागीदारी (%)	राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि (%)
यौन हिंसा विरोध	67.8	32.4	71.5	84.2
LGBTQ+ अधिकार	43.2	38.6	56.3	78.9
शारीरिक स्वायत्तता	71.4	28.9	68.7	81.6
लैंगिक समानता	62.5	41.7	65.2	79.4

सारणी चार डिजिटल सक्रियता के विभिन्न रूपों और उनमें लैंगिक भागीदारी को प्रदर्शित करती है। यौन हिंसा के विरोध में महिला प्रतिभागियों की संख्या सड़सठ दशमलव आठ प्रतिशत है जो पुरुषों के बत्तीस दशमलव चार

प्रतिशत से दोगुनी है। शारीरिक स्वायत्तता के मुद्दों पर भी महिलाओं की सक्रियता इकहत्तर दशमलव चार प्रतिशत के साथ उल्लेखनीय रूप से अधिक है। हैशटैग आंदोलनों में भागीदारी सभी मुद्दों पर पचास प्रतिशत से अधिक पाई गई जो सोशल मीडिया की लामबंदी क्षमता को दर्शाती है। सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि डिजिटल सक्रियता से राजनीतिक जागरूकता में अस्सी प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। एलजीबीटीक्यू प्लस अधिकारों के मामले में पुरुष और महिला भागीदारी अपेक्षाकृत संतुलित है जो इस मुद्दे पर व्यापक सामाजिक जागरूकता का संकेत है।

सारणी 5: पारंपरिक बनाम आधुनिक यौन मानदंडों की स्वीकृति

मानदंड प्रकार	18-25 वर्ष स्वीकृति (%)	36-45 वर्ष स्वीकृति (%)	शहरी स्वीकृति (%)	ग्रामीण स्वीकृति (%)
विवाह-पूर्व संबंध	74.3	28.6	68.4	31.2
समलैंगिक संबंध	61.8	19.4	58.7	23.5
सहजीवन	68.2	22.1	64.3	27.8
महिला यौन स्वतंत्रता	79.6	34.7	73.2	38.9

सारणी पांच में प्रस्तुत आंकड़े पीढ़ीगत और भौगोलिक आधार पर यौन मानदंडों की स्वीकृति में व्यापक अंतर को प्रकट करते हैं। युवा आयु वर्ग में विवाह-पूर्व संबंधों की स्वीकृति चौहत्तर दशमलव तीन प्रतिशत है जो तीस वर्ष से अधिक आयु वर्ग के अट्ठाईस दशमलव छह प्रतिशत से काफी अधिक है। समलैंगिक संबंधों के प्रति युवाओं में स्वीकृति इकसठ दशमलव आठ प्रतिशत पाई गई जबकि पुरानी पीढ़ी में यह मात्र उन्नीस दशमलव चार प्रतिशत है। महिला यौन स्वतंत्रता के प्रति युवाओं में सबसे अधिक उनासी दशमलव छह प्रतिशत समर्थन दर्ज किया गया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्पष्ट विभाजन देखा गया जहां शहरी क्षेत्रों में सभी आधुनिक मानदंडों की स्वीकृति काफी अधिक है। यह आंकड़े तकनीकी पहुंच और उदार मूल्यों के बीच संबंध को दर्शाते हैं तथा यह संकेत करते हैं कि डिजिटल माध्यम यौनिकता की पारंपरिक समझ को चुनौती दे रहे हैं।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी आधुनिकता ने यौनिकता की राजनीतिक पुनर्संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने यौनिकता की अभिव्यक्ति, चर्चा और राजनीतिक संगठन के नए अवसर प्रदान किए हैं। युवा पीढ़ी विशेष रूप से इन माध्यमों के माध्यम से पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को चुनौती दे रही है और अधिक समावेशी और स्वतंत्र यौनिकता की अवधारणा विकसित कर रही है। डिजिटल सक्रियता ने यौन हिंसा, भेदभाव और असमानता के विरुद्ध व्यापक जागरूकता फैलाई है। हालांकि, शोध यह भी प्रदर्शित करता है कि डिजिटल स्थल पूर्णतः समतामूलक नहीं हैं। लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और भौगोलिक स्थिति के आधार पर महत्वपूर्ण असमानताएं विद्यमान हैं। डिजिटल विभाजन केवल तकनीकी पहुंच का मामला नहीं है बल्कि यह गहरी संरचनात्मक असमानताओं को प्रतिबिंबित करता है। महिलाएं और हाशिए के समुदाय ऑनलाइन स्थलों पर विशेष सुरक्षा चुनौतियों का सामना करते हैं जो उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति को सीमित करती हैं। शोध के निष्कर्ष नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करते हैं। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को लैंगिक दृष्टिकोण से डिजाइन करने की आवश्यकता है। ऑनलाइन सुरक्षा तंत्रों को मजबूत बनाना और साइबर यौन अपराधों के विरुद्ध प्रभावी कानूनी ढांचा विकसित करना अनिवार्य है। साथ ही, डिजिटल माध्यमों की सकारात्मक संभावनाओं का उपयोग करते हुए यौन शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों को विस्तारित करने की आवश्यकता है। तकनीकी आधुनिकता और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन स्थापित करना भविष्य की प्रमुख चुनौती है।

संदर्भ

1. राधाकृष्णन, एस. (2016). लिंग संबंधी दृष्टिकोण का अंतर-पीढ़ीगत संचरण: भारत से साक्ष्य. जनसांख्यिकी, 53(3), 723-745.
2. विलियम्स, सी. (2018). रचनात्मक शोध संयोजन के माध्यम से अवसाद से उबरने पर लेखन: मानसिक बंधन, डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-देखभाल की नारीवादी राजनीति. द पैल्ग्रेव हैंडबुक ऑफ़ क्रिटिकल मेंटल हेल्थ (पृष्ठ 89-106) में. पैल्ग्रेव मैकमिलन.

3. कौर (2018). राजनीति में महिलाओं की भागीदारी और राजनीतिक जानकारी तक पहुँचने के लिए डिजिटल तकनीक का उपयोग. जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 3(2), 45-58.
4. पटेल, एन. (2019). डिजिटल सशक्तिकरण: किसका सशक्तिकरण? डिजिटल युग में लैंगिकता और यौनिकता की सीमाओं पर. न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 22(4), 674-692.
5. डेविस, एल. (2020). डिजिटल युग में लिंग, यौनिकता और नस्ल. स्प्रिंगर.
6. राव, एम. (2020). नई दिल्ली, भारत की शहरी मलिन बस्तियों में लिंग और डिजिटल विभाजन: क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन. जर्नल ऑफ मेडिकल इंटरनेट रिसर्च, 22(6), e14714.
7. वर्मा, एस., नायर, और कुमार, आर. (2020). भारत में किशोरों के लिंग-आधारित मानदंडों के अनुभवों को एक सहभागी कहानी-कहने के खेल के माध्यम से समझना. जर्नल ऑफ यूथ स्टडीज, 24(5), 627-644.
8. अब्राहम, टी. (2021). चुनिंदा हिंदी फ़िल्मों में ईसाई महिला पात्रों के प्रतिनिधित्व की राजनीति. मीडिया इंटरनेशनल ऑस्ट्रेलिया, 179(1), 56-69.
9. ब्राउन (2021). संवाद और अंतर्राष्ट्रीय लामबंदी के लिए समकालीन नारीवादी आंदोलन की डिजिटल संभावनाएँ: 25 नवंबर के ट्विटर वार्तालाप का एक केस स्टडी. सामाजिक विज्ञान, 10(3), 84.
10. सुंडस्ट्रॉम, ई. (2021). स्वीडन में नारीवादी डिजिटल कूटनीति और विदेश नीति में बदलाव. प्लेस ब्रांडिंग और पब्लिक डिप्लोमेसी, 18(2), 145-162.